"चारों वेद पूछते हैं - राजनीति का अर्थ"

स्वामी रामस्वरूपजी, योगाचार्य
वेद मन्दिर टीका लैहसर
पोल कैम्प, कांगड़ा (हि॰प्र॰)

कहावत बहुत पुरानी है कि किसी अभिमानी, स्वार्थी, हठधर्मी तथा दुराग्रही का घर एक सज्जन पुरुष के घर के पास था। वर्षा में दुराग्रही की छत पर लगे पतनाले का पानी उस सज्जन के घर में गिरता था और परिवार को परेशान करता था। लाख समझाने पर भी वह दुराग्रही उस पतनाले को वहाँ से नहीं हटाता था। अंत में समस्या पंचायत के सामने रखी गई। पंचों ने उस हठी को बड़ी गम्भीरता से समझाया कि वह अपना पतनाला वहाँ से हटा ले, जिससे पड़ोसी सज्जन के परिवार को परेशानी न हो। सब कुछ भली-भांति सुनकर उस दुराग्रही

ने अंत में अपना निर्णय दिया,

"पंचों की बात सिर माथे पर,
लेकिन पतनाला वहीं रहेगा।"

सम्भवत: यही कहावत आज नेताओं, आन्दोलनकारियों और जनता के बीच चरितार्थ हो रही है। प्रत्येक चुनाव में नेताओं द्वारा किए झूठे वायदे, फिर मंहगाई, गरीबी अन्याय एवं असुरक्षा इत्यादि असंख्य समस्याओं से पीड़ित असहाय जनता अपनी व्यथा पिछले 65 वर्षों से सुनाए जा रही है, परन्तु जनता की अनदेखी करने का कहीं यह कारण नेताओं का पतनाले की तरह दो इक यही एक जवाब तो नहीं है कि जनता की फरियाद सिर माथे लेकिन "कुर्सी से चिपकने, अपना डण्डा चलाने, साख को कायम रखने तथा अपनी एवं परिवार की सुरक्षा व

सुख-सुविधा इत्यादि की पूर्ति के लिए झूठे चुनावी वायदे, चुनावी धींगाकशी, वोटों की खरीदफरोख्त, गरीबों का खून चूसना, निर्दोषों का कत्लेआम, चोरी डकैती, विदेशी धनसाया, बेमिसाल हवाला चारा, तंदूर तथा बोफोर्स इत्यादि काण्डों का उदय और पाँच वर्षों में एक बार अथवा सौ बार चुनावी स्टंट इत्यादि की रचना तो वैसी की वैसी ही रहेगी।

लगता है कि बाल गंगाधर तिलक जी के "स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" के नारे का सदुपयोग स्वतन्त्रता के बाद हमारे अधिकतर नेताओं ने यह कहकर चरितार्थ किया है कि कोई भी हथकण्डा अपनाकर कुर्सी हथियाना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

वाह रे! हमारी पैंसठ वर्षों की स्वतन्त्रता जिसने नेताओं को प्रत्येक क्षेत्र में स्वतन्त्र और प्रजा को उनके समक्ष परतन्त्र कर दिया है। माताओं ने ज़ेवर तथा बेटे कुर्बान

किए, अमीरों ने धन व गरीबों ने खून बहाया, माँ, बहन, बेटियों की इज्ज़त पर कुठाराघात, परिवार के परिवारों का कत्लेआम, भुखमरी, मकान, दुकान, घर-बाहर सब की बर्बादी जैसी रक्तरंजित, भीषण आहुति देकर प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता आज कई स्वार्थी नेताओं की जेबें भर कर जनता को असुरक्षा एवं गरीबी के गम्भीर, भयावह वातावरण में सिसक-सिसक कर रोने-जीने पर मजबूर कर देगी। यह दृश्य देखकर तो शायद गांधी, सुभाष, तिलक, पटेल, भगत सिंह, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, नाना जी, तांत्या टोपे इत्यादि असंख्य शहीदों की कुर्बान हुई रूहें स्वर्ग में कांप जाती होंगी। क्या इतिहास एवं दुःखी जनता की आहें हमारे इस अपराध को क्षमा करेंगी?

वेद, शास्त्रों में कहा है कि रंक को राजा और राजा को रंक या तो

वेदों का ज्ञाता कोई तपस्वी योगी, ऋषि-मुनि कर सकता है अथवा स्वयं भगवान। परन्तु वाह री महाठगिनी माया जिसने ऋषि और भगवान को अलग-अलग न दिखाकर अपितु दोनों को एक ही रूप में प्रकट करके प्रस्तुत कर दिया और वह रूप है वर्तमान की राजनीति में दक्ष राजनेता का, जिसे कहीं-कहीं तो गरीब जनता अथवा चमचे उसे माई-बाप और भगवान तक की पदवी पर बैठा कर रखते हैं। क्योंकि जहाँ पिछले तीनों युगों में ऋषि एवं परमेश्वर से धन-सुख इत्यादि कामना पूर्ति के लिए यज्ञ, योगाभ्यास एवं वर्षों प्रार्थना करनी पड़ती थी, अब यह काम नेताओं के जमाने में आसान हो गया है। अब केवल चुनावों के दिनों में आप नेताओं को उचित-अनुचित

साथ देकर वोट इकट्ठे कर दें। यदि नेता जी जीत गए तब तो आपकी और नेता जी की पौ-बारह। फैक्टरी इत्यादि जिस मर्ज़ी का लाइसेंस लें, पैट्रोल पंप, मकान, दुकान, ज़मीन, एजेंसी, परिवार के बच्चों के लिए कोई भी सीट बिना लियाकत और बिना लाइन में लगे वर्षों अथवा महीनों में नहीं कुछ ही दिनों में आप प्राप्त करके माला-माल हो जाएँ। हाँ! रही बात यह कि आपके विरोध में किसी ने आवाज़ उठाई तो याद रहे कि प्रशासन को नेताओं की आज्ञा मानने का भी प्राय: ठेका है। न्याय-अन्याय से उन्हें कोई सरोकार नहीं। 65 वर्ष की आज़ादी में हमें नेताओं की नेतागिरी से यही सब कुछ तो आशीर्वाद के रूप में प्राप्त हुआ है। प्रश्न उठता है कि राजा अथवा राजनेताओं की क्या